कई मर्तबा हम मर चुके है ओ मन

कई मर्तबा हम,
मर चुके है ओ मन,
मगर अब तो,
आओ गुरू की शरण,
मगर अब तो आओ,
गुरू की शरण,क्यो कि,
जीते हुए मरने की,
कला सीखले गुरू से,
हरि नाम को भजने की,
कला सीख ले गुरू से।bd।

तर्ज – बीते हुए लम्हो की कसक।

सँसार मे हर पाँव,
सँभल करके तू रखना,
काँटो से भरी राहैं,
सँभल करके तू चलना,
दुनिया मे तू रहने की,
कला सीख ले गुरू से,
जीते हुए मरने की,
कला सीखले गुरू से,
हरि नाम को भजने की,
कला सीख ले गुरू से।bd।

एक बार तो आजा,
अरे प्राणी गुरू दर पे,
करके तो जरा देख,
भरोसा गुरुवर पे,
समझाते इशारो मे,
कला सीख ले गुरु से,
जीते हुए मरने की,
कला सीखले गुरू से,
हरि नाम को भजने की,
कला सीख ले गुरू से।bd।

आएगा गुरू दर पर,
[illegible]

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

उस पर तू अमल करले,
तो पा जाएगा मुक्ती,
मुक्ती को तू पाने की,
कला सीख ले गुरू से,
जीते हुए मरने की,
कला सीखले गुरू से,
हरि नाम को भजने की,
कला सीख ले गुरू से।bd।

कई मर्तबा हम,
मर चुके है ओ मन,
मगर अब तो,
आओ गुरू की शरण,
मगर अब तो आओ,
गुरू की शरण,क्यो कि,
जीते हुए मरने की,
कला सीखले गुरू से,
हरि नाम को भजने की,
कला सीख ले गुरू से।bd।

– भजन लेखक एवं प्रेषक –
श्री शिवनारायण वर्मा,
मोबा.न.8818932923

वीडियो अभी उपलब्ध नहीं।

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com